निनाद ललित कला समिति छिन्दवाडा

दैनिक भास्कर

अध्यक्ष–आनंद बक्षी

पं. अश्विनी के सुरों में चला गजलों का कारवां

कभी साया, कभी धूप

भास्कर न्यूज़| छिंदवाड़ा

परंपरागत गायकी के सशक्त हस्ताक्षर पं. अश्विनी वर्मा की गजलों से सजी शुक्रवार की शाम शहरवासियों के लिए यादगार बन गई। शहर के संगीत जगत में लम्बे अर्से से छाई खामोशी को तोड़ते हुए निनाद ललित कला समिति ने जिस गीत, गजल संध्या का आयोजन किया, उसकी यादें शहरवासियों के जेहन में लम्बे अर्से तक ताजा रहेगी। देर रात तक पं. अश्विनी वर्मा के सुरों में सजा गजलों का कारवां चलता रहा और श्रोता भी सुरों की मदहोशी में खोकर वाहवाह करते रहे।

संगीत संध्या का आग़ाज पं. अश्विनी वर्मा ने राग देस में कबीर के भजन चदरिया भीनी-भीनी.. से किया। राग देस में ही अगली गजल थी- कभी साया है, कभी धूप, मुकद्दर मेरा, होता रहता है यूं ही दर्द बराबर मेरा, इस गजल के बाद श्रोताओं द्वारा वाहवाही का जो दौर प्रारंभ हुआ, वह देर रात तक जारी रहा। श्रोताओं की पसंद को भांपते हुए पं. अश्विनी वर्मा ने अगली गजल सुनाई- खुली जो आंख तो वो था, न वो जमाना था, दहकती आग थी, तन्हाई थी, फसाना था। एक अन्य शेर था, गमों ने बांट लिया है मुझे यूं आपस में, कि जैसे मैं कोई लुटा हुआ खजाना हूं। सुरों की यह महफिल देर रात तक चलती रही। पं. अश्विनी वर्मा के साथ सितार पर एसआर शिवलीकर ने, गिटार पर इकबाल अहमद ने एवं तबले पर सतीश मिश्रा ने संगत की। कार्यक्रम का संचालन आयोजक आनंद बक्षी ने किया।

विभूतियों का सम्मान : गीत गजल संध्या के अवसर पर विधायक दीपक सक्सेना के मुख्यातिथ्य में सम्मान समारोह का आयोजन भी किया गया। इसमें नवीन दूगड़, डा. आरएच बग्गा, मेजर डा. राकेश श्रीवास्तव, श्रीमती विस्मिता शाह, मोहम्मद युनुस, तरंग सिंह परिहार का सम्मान शाल श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर किया। अतिथियों एवं कलाकारों का सम्मान आनंद बक्षी, आशीष त्रिपाठी, हाजी नसीमुददीन खान, शाहिद खान, जेड अली, सुरेश डेहरिया, नंदू बारापात्रे आदि ने किया।

लालबहादुर शास्त्री स्कूल में आयोजित गीत, गजल संध्या में गजलों का आनंद लेते श्रोतागण।

गजलों का दौर फिर लौटेगा

शास्त्रीय संगीत आज जिस दौर से गुजर रहा है, उसमें गजल अब बची ही नहीं, वह गीत बन गई है। इबादत और बंदिगी का नाम ही गजल है। पुरानी एवं परंपरागत शैली की गायिकी में जो माधुर्य है, वह आज के फिल्मी संगीत में नहीं मिल सकता।

यह बात विख्यात गायक कलाकार पं. अश्विनी वर्मा ने पत्रकार वार्ता में कही। उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी का रूझान शास्त्रीय संगीत की ओर बढ़ रहा है। यह भविष्य के लिए अच्छा संकेत है। गजल का दौर एक बार फिर से लौट कर आएगा। उन्होंने कहा कि गजल में जिंदगी की हकीकत और दर्द समाया रहता है। मैं अगर अपना दुखड़ा सुनाने बैठूंगा तो कोई नहीं सुनेगा, लेकिन वही बात गजल में कहीं जाए तो लोग बार-बार सुनना चाहेंगे।